Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

परशुराम शुक्ल के बालकाव्य में बिम्ब–योजना

मनोज कुमार
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कालेज, अंबाला कैंट

बिम्ब की परिभाषा का स्वरूप

बिम्ब शब्द को अंग्रेजी में Image कहा जाता है। Image का सामान्य अर्थ है– 'प्रतिमा' जिसकी रचना कवि अपने मानस में स्मृति विगत अनुभव विशुद्ध कल्पना अथवा संयुक्त रूप से स्मृति और कल्पना के आधार पर करता है। काव्य में जब वह मानस प्रतिमा कवि की अनुभूति के सम्प्रेषण का शब्दार्थमय माध्यम बनती है तो उसे काव्य बिम्ब कहा जाता है।

बिम्ब का जन्म चित्रमय शक्ति से हुआ है। बिम्ब वस्तु जगत के संसर्ग से मनों में अंकुरित अरूप भाव संवेदनों को मूर्त रूप प्रदान करते है।[1] बिम्ब काव्य का अत्यन्त प्रभावी माध्यम है और इसलिए काव्य के संदर्भ में उसका मूल्य अंसदिग्ध है।[2]

हिन्दी साहित्य कोष में बिम्ब शब्द को प्रस्तुत परिवेश और संवेदनाओं और प्रत्यक्ष के अतिरिक्त व्यक्ति के मानस में घटित अतीत की अथवा अस्ति व्हीन एवम् अघटित तत्वों की असंख्य मानव प्रतिमाओं का पर्याय माना गया है।[3]

कविता का प्राथमिक कर्त्तव्य बिम्ब ग्रहण कराना है और उसका साधन अप्रस्तुत है। इसके बिना कवि मनोरम भाव का हृदयहारी बनाकर अपना कह ही नही सकता।[4]

यहां यह बात द्रष्टव्य है कि जिस कवि का जीवन और जगत के वृहत्तर यथार्थ में जितना गहरा रागात्मक सम्बन्ध होगा वह उतने ही सफल बिम्बों का निर्माण कर सकेगा।[5]

कवि समाज में रहकर अपने परिवेश की अनुभूति करके अपने अनुभवों के आधार पर बिम्बों का निर्माण करता है। कवि के अनुभवों का प्रथम आधार उसका मानस और इन्द्रियां होती है और दूसरा आधार सामाजिक स्त्रोत और सरोकार होते है। बिम्ब शब्द छाया, प्रतिच्छाया प्रतिकृति, प्रतिच्छवि, प्रतिबिम्ब तथा प्रत्यंक्ति रूप चित्र आदि शब्दों का पर्याय या समानर्थी है।

सामान्यतः काव्य बिम्ब को एक कल्पना चित्रण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, जिससे रंग और रेखाओं के अतिरिक्त भावों का सन्निवेश रहता है।

भाव को सम्प्रेषणीय बनाने का दृश्टि से बिम्ब का विशेष महत्व है। बिम्बों के माध्यम से कृतिकार, वस्तु, घटना, व्यापार, गुण आदि साकार तथा निराकार पदार्थो और मानस क्रियाओं को प्रत्यक्ष और इन्द्रिय ग्राह्य बनाता है। सूक्ष्म अनुभूतियों को अपने स्थूल सन्दर्भों से संयुक्त होकर मानस मूर्तियों में ढल जाना ही बिम्ब विधान कहलाता है। विश्व कोष में भी बिम्ब को प्रतिच्छाया ही माना गया है।

PURVA MIMAANSA

प्रत्येक व्यक्ति संसार में विविध घटनाओं को देखता है और उसका प्रतिबिम्ब सूक्ष्म रूप में कवि के मानस पर अंकित हो जाता है। सामान्य व्यक्ति के मानस पर पड़े बिम्ब तो प्राय लुप्त हो जाते है। परन्तु संवेदनशील हदयकवि के मन पर ये चित्र अमिट बने रहते है। कवि इन्ही बिम्बों के माध्यम से ही कुछ चित्र प्रस्तुत करता है। ये बिम्ब मानस चित्र, कल्पना चित्र या अर्थ चित्र भी कहलाते है। बिम्ब योजना ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कवि दृष्य सौंदर्य को चित्र रूप में प्रस्तुत करता है। आधुनिक काल की कविताओं में प्रतीक योजना के साथ–साथ बिम्ब योजना का अत्यधिक महत्व है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, बिम्ब की परिभाषा का इस प्रकार है– ''बिम्ब काव्य का अत्यन्त प्रभावी माध्यम है। और इसलिए काव्य के संदर्भ में उसका मूल्य असंदिग्ध है।''[6]

कुछ विद्वानों ने बिम्ब की परिभाषाएं इस प्रकार दी है–

डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा के अनुसार, ''सूक्ष्म अनुभूतियों का अपने स्थूल संदर्भो से संयुक्त होकर मानस स्मृतियों में ढल जाना ही बिम्ब कहलाता है।''[7] बिम्ब की आवश्यक विशेषताएँ है– स्पष्ट, संजीवता, सम्पन्नता, औचित्य, मौलिकता तथा तीव्र घटना बिम्ब के स्वरूप के विस्तार के रागात्मक, रसात्मकता, चिंतन, कल्पना एवम् अप्रस्तुत विधान आदि समाविष्ट है।

बिम्ब को भावों का रूप देने वाला माना गया है। बिम्ब किसी वस्तु या भाव का चित्र और कल्पना चित्र है। साहित्यकार जगत की वस्तु को यथावत रूप में देखकर अपनी ओर से रूपक, उपमा आदि के सहारे जब उसकों एक नया रूप देता है तो वह नया रूप बिम्ब के द्वारा काव्य में संक्षिप्तता वास्तविकता की प्रतिष्ठा थोड़े में ज्यादा का बोध है। इसमें अनेक अर्थो की संभावना आदि संभव है।

बिम्ब के भेद– साधारण तय बिम्ब के अनेक भेद है– ऐन्द्रिय आधार पर बिम्ब के चार भेद दिए जा सकते है। 1. चाक्षुष 2. श्रव्य 3.स्पृदृश्य 4. आस्वाध्य।

चाक्षुष बिम्ब–

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चाक्षुष के लिए दृश्य शब्द का प्रयोग किया है। चाक्षुश से अभिप्राय है जो नेत्रों के विशय है।

प्राकृतिक बिम्ब–

प्राकृतिक बिम्बों में प्रकृति के दृश्यों को सजीव चित्रण किया है। शुक्ल जी ने प्राकृतिक बिम्बों को माध्यम बनाकर सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है–

''सैर सपाटा जंगल वाला,
हम बच्चों को भाता।
ऊँचे पर्वत, नदियां, झरने,
हम सबके दीवाने।''[8]

कवि प्रकृति प्रेमी है और प्रकृति के माध्यम से विभिन्न बिम्बों का सुन्दर प्रयोग किया है।

नंदनवन' शिशुगीत संग्रह में कवि ने दृश्य बिम्ब का सुन्दर वर्णन किया है। ''दृश्य बिम्ब का अभिप्राय देखने से है इसका सम्बन्ध नेत्र या आँख से है जहां कवि किसी वस्तु के रूप, रंग, गुण, आकार आदि का वर्णन करके हमारी रागात्मक चेतना को उद्‌बुद्ध करता हुआ, हमारे नेत्रों के सामने एक बिम्ब प्रस्तुत करता है वहा दृश्य बिम्ब होता है, इसे चाक्षुष बिम्ब भी कहते है।''[9]

''राधा, रूपा, रेखा, राजू,
सागर तट पर आये।
सागर की गीली मिट्‌टी से
सबने महल बनाये।
एक लहर ने आकर उनके,
सारे महल गिराये।
हंसते, गाते, शोर मचाते,
बच्चे, वापस आये।''[10]

''आस्वाद्य बिम्ब का सम्बन्ध वस्तुतः हमारी जिह्वेन्द्रिय से है। इसलिए कुछ विद्वान इसे रस बिम्ब या आस्वाद्य बिम्ब भी कहते है। जहां कवि किसी वस्तु के रूप, गुण, स्वाद आदि का वर्णन कर हमारी रागात्म्क चेतना को उद्‌बुद्ध करता हुआ हमारी जिह्वा के सामने एक बिम्ब प्रस्तुत करता है, वहां आस्वाद्य बिम्ब होता है। ये बिम्ब अपने रसानन्द से सरावोर कर पाठक को अभिभूत कर देते है।''[11]

''मम्मी मम्मी भूख लगी है
चॉकलेट मैं खाऊँगा।
मीठे वाले बिस्कुट खाकर,
दिनभर मौज मनाऊंगा।''[12]

ध्वनि बिम्ब– ''जहां कवि किसी वस्तु के ध्वनि, गुण आदि का वर्णन करते हुए हमारी रागात्मक चेतना को उद्‌बुद्ध करता हुआ हमारी ज्ञानेन्द्रियों के समक्ष एक बिम्ब प्रस्तुत करता है, वहां ध्वनि बिम्ब होता है। ध्वनि बिम्ब के माध्यम से सहदय पाठक भावों की श्रृति पर रसानन्द ग्रहण करता है। शुक्ल जी ने भी ध्वनि बिम्बों का प्रयोग करते हुए अपने काव्य को प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। यथा–

''धरती मां की प्यास बुझाने,
नभ पर बदरी छाई।
रिमझिम रिमझिम जल बरसाने,
वर्षा रानी आई।।''[13]

PURVA MIMAANSA

प्रस्तुत उद्धरण में वर्षा ऋतु के आगमन पर संगीत ध्वनि बिम्ब को प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची

1. माधव कौशिक, 'गजल स. बैजनाथ सिंहल', 'धूप और गंध', पृ. 103
2. डॉ. नगेन्द्र, 'काव्य बिम्ब', पृ. 62
3. (स.) धीरेन्द्र वर्मा, 'साहित्यकोश', प्रथम भाग, पृ. 514
4. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'हिन्दी साहित्य', पृ. 456
5. केदार नाथ सिंह, 'आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान', पृ. 21
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 'चिन्तामणि, भाग–2
7. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, 'तुलसी साहित्य के सांस्कृतिक आयाम, पृ. 369
8. डॉ. परशुराम शुक्ल, 'सूरज पाना है', पृ. 79
9. सुभाष चंद भारती, 'बलदेव वंशी : काव्य के विविध आयाम, पृ. 228
10. डॉ. परशुराम शुक्ल, 'नंदनवन', पृ. 30
11. डॉ. परशुराम शुक्ल, 'नंदनवन', पृ. 223
12. डॉ. परशुराम शुक्ल, 'नंदनवन', पृ. 78
13. डॉ. परशुराम शुक्ल, 'मंगल ग्रह जांएगे, पृ. 55

PURVA MIMAANSA